साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Global School Of Excellence, Obedullaganj

वर्ष : 8, अंक : 28 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 1 मार्च 2023 से 7 मार्च 2023 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

अल नीनो बढ़ाएगा गर्मी व वर्षा के पैटर्न पर पड़ेगा भारी असर- डब्ल्यूएमओ

नई दिल्ली। विश्व मौसम विज्ञान संगठन (डब्ल्यूएमओ) के अनुसार, ला नीना के लगातार तीन सालों के बाद आने वाले महीनों में गर्म करने के लिए जानी जाने वाली घटना अल नीनो विकसित हो सकता है। जो दुनिया के विभिन्न हिस्सों में तापमान और वर्षा के पैटर्न को प्रभावित कर सकता है।

डब्ल्यूएमओ के मुताबिक लंबी ला नीना वाली मौसम की घटना, जिसने हाल के वर्षों में सूखे और बाढ़ को बढ़ा दिया था, अब यह समाप्ती की और है। लेकिन आगे मौसम में भारी बदलाव होने के आसार हैं, अल नीनो की घटना समस्याओं को बढ़ा सकता है। डब्ल्यूएमओ ने यूके के मौसम विभाग द्वारा लगाए गए पूर्वानुमान को दोहराते हुए कहा कि, इस बात के 50 प्रतिशत आसार हैं कि अगले कुछ सालों में पृथ्वी अस्थायी रूप से पूर्व-औद्योगिक औसत तापमान से 1.5 डिग्री सेल्सियस ऊपर पहुंच सकती है। वर्तमान में चल रहे ला नीना की घटना, जिससे समुद्र की सतह का तापमान ठंडा हो जाता है, दुनिया भर के मौसम पर भारी असर डाल सकता है, ला नीना की घटना सितंबर 2020 में शुरू हुई थी। हालांकि, ला नीना के ठंडे प्रभाव के बावजूद, 2015 से पहले के किसी भी साल की तुलना में 2021 और 2022 दोनों साल अधिक गर्म रहे। सामान्य तौर पर दुनिया भर में तापमान में वृद्धि हुई है, जिसने 2016 को अब तक का सबसे गर्म साल बना दिया था। जो भारत में ज्यादातर लू, खराब मॉनसून और सूखे के लिए जिम्मेदार रहा। डब्ल्यूएमओ ने अपने त्रैमासिक अपडेट में कहा कि अब ला नीना के विपरीत गर्मी के लिए जाना जाने वाला अल नीनो चक्र इस साल आगे बढ़ रहा है। डब्ल्यूएमओ ने कहा कि असामान्य रूप से जिद्दी और लंबे समय तक ला नीना के लगातार तीन साल तक खिंचे रहने के बाद, एक ट्रिपल-डिप कहे जाने वाले जून से अगस्त में अल नीनो के विकसित होने के बहुत अधिक आसार थे। डब्ल्यूएमओ के प्रमुख पेटेरी तालस ने कहा, 21वीं सदी की पहली ट्रिपल-डिप ला नीना आखिरकार समाप्त हो रही है। उन्होंने कहा ला नीना के ठंडे प्रभाव ने भले ही बढ़ते वैश्विक तापमान पर एक अस्थायी रोक लगा दी थी, फिर भी पिछले आठ

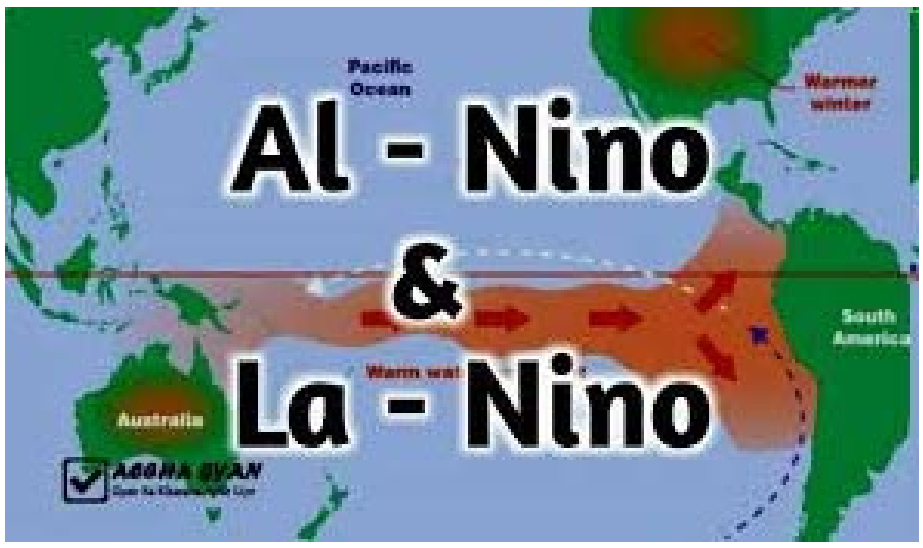

साल की अवधि रिकॉर्ड पर सबसे गर्म रही। अगर हम अब अल नीनो चरण में प्रवेश करते हैं, तो इससे दुनिया भर में तापमान में एक और उछाल आने की आशंका जताई गई है।

मौसम का अनिश्चित पूर्वानुमान- ला नीना मध्य और पूर्वी भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर में सतह के तापमान को बड़े पैमाने पर ठंडा करने से है। यह आमतौर पर हर दो से सात साल में होता है। ला नीना और उसके विपरीत अल नीनो के बीच स्थितियां दोलन करती हैं, बीच में तटस्थ स्थितियां होती हैं। डब्ल्यूएमओ ने कहा कि मार्च से मई के दौरान तटस्थ स्थितियों की 90 प्रतिशत रहने की संभावना थी, जो अप्रैल से जून के दौरान 80 प्रतिशत और मई से जुलाई में 60 प्रतिशत तक घट जाती है। अल नीनो के विकसित होने के आसार अप्रैल से जून में 15 फीसदी, मई से जुलाई में 35 फीसदी और जून से अगस्त में 55 फीसदी रहने का अनुमान है।हालांकि, साल के इस समय लगाए जाने वाले पूर्वानुमानों में भारी अनिश्चितता है। त्रैमासिक अपडेट पर काम कर रहे डब्लूएमओ के सलाहकार अल्वारो सिल्वा ने कहा, हमें अधिक आश्वस्त विचार रखने के लिए अतिरिक्त दो या तीन महीने की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि दो चरणों के बीच दोलन पर नजर रखने से देशों को बाढ़, सूखा या अत्यधिक गर्मी जैसे प्रभावों के लिए तैयार होने में मदद मिलती है।

अल नीनो के खतरे- सिल्वा ने कहा ठंडा करने वाला ला नीना के साथ भी, पिछले आठ साल रिकॉर्ड पर सबसे गर्म थे, इसलिए हमारे पास यहां जलवायु परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण संकेत है। एल नीनो के साथ, इस बात के आसार बढ़ जाते है कि हम आगे रिकॉर्ड पर सबसे गर्म साल देखेंगे। डब्ल्यूएमओ ने कहा कि भले ही ला नीना समाप्त हो रहा था, लेकिन इसकी लंबी अवधि के कारण छिपे हुए प्रभावों के कुछ समय तक जारी रहने के आसार हैं, इसलिए वर्षा पर इसके कुछ प्रभाव बने रह सकते हैं। डब्ल्यूएमओ के मुताबिक हालांकि एल नीनो और ला नीना एक प्राकृतिक घटना है, वे मानवजनित जलवायु परिवर्तन की पृष्ठभूमि के खिलाफ होते हैं, जो दुनिया भर के तापमान में वृद्धि कर रहा है, मौसमी वर्षा के पैटर्न को प्रभावित कर रहा है और हमारे मौसम को और अधिक चरम बना रहा है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) द्वारा जारी मार्च से मई (एमएएम) के आउटलुक के मुताबिक, इन महीनों के दौरान मध्य और आसपास के उत्तर पश्चिम भारत के कई क्षेत्रों में लू या हीटवेव चलने की आशंका जताई गई है।

पर्यावरण संरक्षण के लिए दुबई में करवाई गई पॉपुलर क्वीन ऑफ यूनिवर्स 2023 प्रतियोगिता

दुबई अमर सिने प्रोडक्शंस मुंबई के द्वारा दुबई में इंटरनेशनल सस्टेनेबल फैशन शो के लिए पॉपुलर क्वीन ऑफ यूनिवर्स का आयोजन किया गया । इस दौरान विभिन्न देशों की IAWA क्वीन ने दुबई के ग्रैंड शेरेटन में पर्यावरण बचाओ गो ग्रीन के लिए रैंप वॉक की। दो दिवसीय भव्य कार्यक्रम की मेजबानी दुबई की बबली पूजा कतुहरिया ने की। शो के दौरान दुनिया भर में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं ने रैंप पर वॉक किया। इसी कार्यक्रम के तहत भारत के IAWA NGO ने दुबई में पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूकता पैदा की। 22 फरवरी को डॉ कबीर केवी द्वारा यॉट में शेख माजिद राशिद अल मुअल्ला के सीओओ द्वारा दुबई के खूबसूरत समुद्र में ग्रैंड क्राउनिंग की गई। इस मौके पर बॉलीवुड अभिनेत्री, फिलोनोथ्रिपिस्ट, सामाजिक कार्यकर्ता व IAWA की अध्यक्ष डा. दलजीत कौर, जो द अमेरिकन यूनिवर्सिटी की राजदूत भी हैं , के अलावा अमरसिने प्रोडक्शन के अमर बेदी ने सामाजिक कार्यकर्ता और क्वींस के साथ दुनिया भर में जागरूकता पैदा करने का संकल्प लिया । इसदौरान डा. दलजीत कौर ने कहा कि पेड़ों की कटाई, ऊंची इमारतों ने ग्लोबल वार्मिंग पर बहुत प्रभाव डाला है जो हमारी आने वाली पीढ़ियों के जीवन के संकट को बढ़ा रहा है। प्राकृतिक आपदाएं सभी मानव द्वारा पृथ्वी पर बहुत अधिक दबाव डालने के कारण हैं। पृथ्वी की स्थिरतासमय की परम आवश्यकता है ।

फरवरी ने तोड़े गर्मी के पिछले सारे रिकॉर्ड, मार्च से मई के दौरान अधिकांश हिस्सों में सामान्य से अधिक रहेगा तापमान

मुंबई। मौसम विभाग ने आज यानी 28 फरवरी 2023 को एक संवाददाता सम्मेलन में फरवरी के मौसम के आंकड़ों का विश्लेषण जारी किया। साथ मार्च से मई तक के मौसम का पूर्वानुमान भी जारी किया। विभाग की ओर से बताया गया कि फरवरी 2023 में औसत अधिकतम तापमान 29.54 डिग्री सेल्सियस रहा। जो 1901 से लेकर अब तक का सबसे अधिक था। इससे पहले 2016 में सबसे अधिक 29.48 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया था। 2023 फरवरी में यह रिकॉर्ड तोड़ दिया।

मौसम विभाग के अनुसार, मार्च से मई (एमएएम) के दौरान पूर्वोत्तर भारत के अधिकांश हिस्सों, पूर्व और मध्य भारत और उत्तर-पश्चिम भारत के कुछ हिस्सों में अधिकतम तापमान के सामान्य से अधिक रहने का अनुमान है। वहीं देश के शेष भागों में अधिकतम तापमान सामान्य से कम रहने का पूर्वानुमान है। इस सीजन (एमएएम) के दौरान, भारत के दक्षिणी प्रायद्वीप को छोड़कर देश के अधिकांश हिस्सों में न्यूनतम तापमान के सामान्य से अधिक रहने के आसार हैं, वहीं भारत के दक्षिणी प्रायद्वीप में न्यूनतम तापमान के सामान्य से काफी नीचे रहने का अनुमान है। मार्च 2023 में देश के अधिकांश हिस्सों में अधिकतम तापमान के सामान्य से अधिक रहने की आशंका जताई गई है, सिवाय भारत के दक्षिणी प्रायद्वीप जहां अधिकतम तापमान के सामान्य से काफी नीचे रहने की संभावना है। भारत के दक्षिणी प्रायद्वीप को छोड़कर भारत के अधिकांश हिस्सों में मार्च, 2023 के दौरान न्यूनतम तापमान सामान्य से ऊपर रहने के आसार हैं, वहीं भारत के दक्षिणी प्रायद्वीप में न्यूनतम तापमान के सामान्य से नीचे रहने का पूर्वानुमान है।

कहां चलेगी लू- मार्च से मई के मौसम के दौरान मध्य और आसपास के उत्तर पश्चिम भारत के कई क्षेत्रों में लू या हीटवेव चलने की आशंका जताई गई है। मार्च 2023 के दौरान मध्य भारत में लू चलने की संभावना कम है।

देश में कहां कितनी बारिश होगी?- वहीं देश में बारिश की बात करें तो, मार्च 2023 में देश भर में औसत वर्षा सामान्य (एलपीए का 83-117 फीसद) रहने की संभावना है। उत्तर-पश्चिम भारत के अधिकांश क्षेत्रों, पश्चिम मध्य भारत और पूर्व और पूर्वोत्तर भारत के कुछ हिस्सों में सामान्य से कम वर्षा होने की आशंका जताई गई है। भारत के दक्षिणी प्रायद्वीप के अधिकांश हिस्सों, पूर्व मध्य भारत और पूर्वोत्तर भारत के कुछ इलाकों में सामान्य से अधिक बारिश होने का पूर्वानुमान है। मौसम विभाग के मुताबिक, 1971 से 2020 के आंकड़ों के आधार पर मार्च के दौरान देश भर में वर्षा का एलपीए लगभग 29.9 मिमी है। बारिश को लेकर पूर्वानुमान बताता है कि उत्तर-पश्चिम और पश्चिम मध्य भारत के कई क्षेत्रों और पूर्वोत्तर और पूर्वी भारत के कुछ हिस्सों में सामान्य से कम वर्षा होने के आसार हैं। भारत के दक्षिणी प्रायद्वीप के अधिकांश हिस्सों, पूर्व मध्य भारत के कुछ हिस्सों और पूर्वोत्तर भारत के कुछ अलग-अलग इलाकों में सामान्य से अधिक वर्षा होने का अनुमान है।

प्रशांत और हिंद महासागर में समुद्री सतह के तापमान (एसएसटी) की स्थिति- वर्तमान में भूमध्यरेखीय प्रशांत क्षेत्र में ला नीना की स्थिति बनी हुई है। ला नीना के कमजोर पड़ने और पूर्व-मॉनसून सत्र के दौरान अल नीनो दक्षिणी दोलन (ईएनएसओ) के तटस्थ स्थितियों में बदलने की संभावना है। प्रशांत क्षेत्र में ईएनएसओ स्थितियों के अलावा, हिंद महासागर एसएसटी जैसे अन्य कारक भी भारतीय जलवायु को प्रभावित करते हैं। वर्तमान में, तटस्थ आईओडी स्थितियां हिंद महासागर के ऊपर मौजूद हैं और नवीनतम एमएमसीएफएस पूर्वानुमान इस ओर इशारा कर रहा है कि तटस्थ आईओडी स्थितियां पूर्व-मॉनसून सीजन के दौरान जारी रहने का अनुमान है।

पर्यावरण सुरक्षा की दिशा में वस्त्र उद्योग, पकड़ी पुनर्नवीनीकरण की राह

नई दिल्ली। हाल ही में प्रधानमंत्री मोदी को संसद में बजट सत्र के दौरान पुनर्नवीनीकृत प्लास्टिक की बोतलों से बनी एक विशेष नीली जैकेट पहने हुए देखा गया था, जिसे इंडियन ऑयल द्वारा अपने ग्रीन इनिशिएटिव ऑफ सस्टेनेबल गारमेंट्स के तहत पुनर्नवीनीकृत पीईटी बोतलों से बनाया गया था। पुनर्नवीनीकरण या पुनर्चक्रीकरण एक ऐसा फॉर्मूला है, जो पर्यावरण की सुरक्षा में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। इस प्रक्रिया के माध्यम से हम प्राकृतिक संसाधनों के विनाश, पर्यावरण प्रदूषण तथा जलवायु परिवर्तन से कराहती दुनिया में एक चक्रीय अर्थव्यवस्था भी स्थापित कर सकते हैं, जो हमें विनाश के दुश्चक्र से छुटकारा दिलाने में सहायक होगी।

कपड़ा उद्योग में बहुत सारा अपशिष्ट पैदा होता है, जो न केवल कपड़ा निर्माण के दौरान, बल्कि कपड़ा उपयोग के दौरान भी पैदा होता है। वस्त्र अपशिष्ट दो प्रकार के होते हैं; उत्पादक अपशिष्ट और उपभोक्ता अपशिष्ट। उत्पादक अपशिष्ट में कपास, ऊन, पॉलिएस्टर, ऐक्रेलिक, सिंथेटिक, नायलॉन आदि सभी प्रकार की सामग्री होती है, जो कपड़ा निर्माण के विभिन्न चरणों, जैसे यार्न स्पिनिंग, फैब्रिक बुनाई आदि से आती है। उपभोक्ता अपशिष्ट इस्तेमाल किए गए कपड़ों से रैग्ज के रूप में आता है। आजकल कुछ लोग जरूरत से ज्यादा कपड़े खरीदते हैं। कुछ कपड़े ऐसे भी होते हैं, जिन्हें लोग एक बार से ज्यादा नहीं पहनते हैं और बाद में वे कबाड़ में पहुंच जाते हैं। अपने अपघटन के दौरान कपड़े ग्रीनहाउस गैसों का उत्पादन करते हैं। कपड़ा उद्योग वैश्विक कार्बन उत्सर्जन का 10 फीसदी ग्रीनहाउस गैसों का उत्पादन करता है, जो पर्यावरण के लिए खतरनाक है। कपड़ा उद्योग ने पर्यावरण पर अपने हानिकारक प्रभाव को कम करने के लिए विभिन्न कदम उठाए हैं, जिनमें से एक कपड़ा पुनर्नवीनीकरण है। यह नई अवधारणा नहीं है, पेटागोनिया कपड़े की पहली कंपनी थी, जिसने 1993 में पहली पॉलिएस्टर फ्लीस जैकेट का उत्पादन करने के लिए पीईटी बोतलों को पुनर्नवीनीकृत किया था। हरियाणा स्थित कपड़ा पुनर्नवीनीकरण केंद्र हर साल कई विकसित देशों द्वारा छोड़े गए लगभग 1,44,000 टन पुराने कपड़ों को रीसाइकल करता है। कपड़ा पुनर्नवीनीकरण पुराने कपड़े, फाइबर और स्क्रैप का उपयोग नए कपड़े बनाने की विनिर्माण प्रक्रिया है। हर प्रकार के कपड़े का पुनर्नवीनीकरण किया जा सकता है। पुनर्नवीनीकृत किए जा रहे आम कपड़ों में सूती और पॉलिएस्टर शामिल हैं। पुनर्नवीनीकरण पर्यावरण और आर्थिक दृष्टि से फायदेमंद है, जो रसायनों की आवश्यकता को कम करता है। इसके अलावा, कपड़ा पुनर्नवीनीकरण से लैंडफिल स्पेस की आवश्यकता कम हो जाती है, ऊर्जा की भी खपत कम होती है, और पानी की बर्बादी भी कम होती है। तथ्यों के अनुसार, कपड़ों की पुनर्नवीनीकरण करने से 70 फीसदी कम ऊर्जा, 75 फीसदी कम कार्बन डाइऑक्साइड और 86 फीसदी कम पानी का उपयोग होता है। रंग के आधार पर वस्त्रों को क्रमबद्ध करके, पुनर्नवीनीकृत कपड़े को फिर से रंगने की आवश्यकता नहीं होती है। फलस्वरूप, यह ऊर्जा का संरक्षण करता है और कपड़ा रंगाई प्रक्रिया के दौरान होने वाले प्रदूषण को कम करता है। कई फैशन ब्रांड जैकेट, जींस, हुडी, स्वेटशर्ट और पफर जैकेट आदि बनाने के लिए पुनर्नवीनीकरण सामग्री का उपयोग करते हैं। कपड़ा अपशिष्ट की एक बड़ी मात्रा, कंबल, शॉल, कालीन आदि जैसे कम गुणवत्ता वाले उत्पादों को बनाने के लिए कच्चे माल के रूप में भी उपयोग की जाती है। कपड़ा पुनर्नवीनीकरण को केवल तभी बढ़ावा दिया जा सकता है, जब लोग इस पर्यावरण अनुकूल प्रक्रिया से निर्मित वस्त्र उत्पाद को बढ़ावा दें और उसका उपयोग करें। इस संबंध में उपभोक्ता जागरूकता बढ़ाने और निर्माताओं को नए उत्पादों में वस्त्र अपशिष्ट के उपयोग को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

क्यों काटे जाने हैं 44 लाख पेड़, क्या है सरकार की तैयारी?

बुंदेलखंड क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि किसी इलाके में जहां पहले से ही पेड़-पौधों की संख्या कम हो, लेकिन आने वाले समय में उसी इलाके के 44 लाख पेड़ काटने की तैयारी की जा रही हो। यह इलाका है मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के 13 जिलों में फैला बुंदेलखंड क्षेत्र। जो पिछले डेढ़ दशक से सूखे की मार से अभिशप्त है। ऐसे विपरीत हालात में इस इलाके के लाखों पेड़ काटे जाने के बाद क्या यह उम्मीद बच पाएगी कि भविष्य में इस इलाके से सूखा खत्म हो जाएगा? बुंदेलखंड के बक्सवाहा (छतरपुर, मध्य प्रदेश) के जंगलों में हीरा खदान के लिए चार लाख से अधिक पेड़ों को काटे जाने के खिलाफ दायर याचिका को नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल यानी एनजीटी ने 28 फरवरी 2023 को खारिज कर दिया।

इसका मतलब है कि अब हर हाल में चार लाख पेड़ काटे ही जाएंगे। एनजीटी ने याचिका को अपरिपक्व करार दिया। हालांकि इस आदेश के खिलाफ याचिकाकर्ता पीजी पांडे ने पुनर्विचार याचिका दायर की है। ध्यान रहे कि मध्य प्रदेश ने बुंदेलखंड के बांदा, चित्रकूट व महोबा की सीमा से लगे बक्सवाहा में हीरा खनन के लिए एक्सेल माइनिंग कंपनी को पेड़ काटने के लिए अभी तक 364 हैक्टेयर भूमि का पट्टा आबंटित किया है। इस जंगल में केवल पेड़ ही नहीं है, बल्कि यहां के पत्थरों व चट्टानों पर दुर्लभ ऐतिहासकि शैल चित्र भी मौजूद हैं। इनके भी अब नष्ट होने का खतरा मंडरा रहा है। मध्य प्रदेश पुरातत्व विभाग ने इस क्षेत्र में एक व्यापक सर्वे किया था और उसमें यह बात निकलकर आई थी कि बक्सवाहा के जंगल में पाषाणकालीन रॉक पेंटिंग्स मौजूद हैं। बुंदेलखंड के जिस इलाके में हीरा खनन का ठेका दिया जा रहा है, वहां केवल पेड़ ही नहीं कटेंगे, बल्कि वहां के पत्थरों व चट्टानों पर दुर्लभ ऐतिहासकि शैल चित्र भी मौजूद हैं। इसके अलावा इस जंगल में कल्चुरी और चंदेल काल की कई मूर्तियां और स्तंभ भी मौजूद हैं, जिनका खनन की वजह से नुकसान पहुंच सकता है। यही नहीं, इसी इलाके में केन-बेतवा लिंक बांध परियोजना में पन्ना टाइगर रिजर्व के 23 लाख पेड़ काटे जाने की भी तैयारी है। यह बात परियोजना के विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) में लिखित तौर पर दर्ज है। यदि इसकी सैटलाइट सर्वेक्षण संख्या को देखें तो लगभग 40 लाख पेड़ काटे जाएंगे। रिपोर्ट के अनुसार इस परियोजना को लागू करने के लिए 6,017 हेक्टेयर वन भूमि को खत्म किया जाएगा। यह वन भूमि 8,427 फुटबॉल के मैदान के बराबर है। पन्ना के जंगलों में सागौन, महुआ, बेलपत्र, आचार, जामुन, खैर, कहवा, शीशम, जंगल जलेबी, गुली, आंवला समेत अन्य प्रमुख प्रजातियों के बहुत पुराने पेड़ बड़ी संख्या में पाए जाते हैं। इसके साथ-साथ यहां घड़ियाल अभ्यारण्य और गिद्धों का प्रजनन केंद्र भी गंभीर रूप से प्रभावित हुए बिना नहीं रहेगा। बुंदेलखंड के पर्यावरण कार्यकर्ता आशीष सागर दीक्षित का कहना है कि इलाके से इतनी बड़ी संख्या में पेड़ों के काटे जाने के बाद यहां की जैव विविधता पूरी तरह से खत्म हो जाएगी, यही नहीं हीरे की परियोजना पर प्रतिवर्ष 53 लाख क्यूबिक पानी भी खर्च होगा। पहले से ही सूखे की मार झेल रहे इलाके लिए यह और भी गंभीर खतरा है। ध्यान रहे कि बक्सवाहा के जंगलों में 3.42 करोड़ कैरेट के हीरों का यहां दबे होने का अनुमान है। भारत में अभी तक हीरे का सबसे बड़ा भंडार मध्य प्रदेश के पन्ना जिले में है लेकिन बक्सवाहा में तो पन्ना से 15 गुना अधिक हीरे निकलने का अनुमान लगाया गया है। मध्य प्रदेश सरकार ने बुंदेलखंड क्षेत्र में हीरे की खोज के लिए 2010 में ऑस्ट्रेलियाई कंपनी रियो टेंटो की मदद से सर्वे कराया था। सर्वे के दौरान ही बक्सवाहा के आसपास किंबरलाइट पत्थर की चट्टानें दिखाई दीं।

हीरा इन्हीं किंब्रलाइट की चट्टानों में मिलता है। 2002 में कंपनी को औपचारिक रूप से क्षेत्र में हीरा तलाशने का काम सौंप दिया गया। लंबे शोध के बाद कंपनी ने खनन की तैयारियां शुरू कीं लेकिन स्थानीय समुदाय के विरोध के कारण कंपनी ने 2016 में इस परियोजना से अपने को अलग कर लिया। इसके बाद 2019 में हीरे की खदान का नया लाइसेंस आदित्य बिड़ला ग्रुप की एक्सेल माइनिंग कंपनी को मिला। वहीं दूसरी ओर केन-बेतवा लिंक प्रोजेक्ट इस दलील पर आधारित है कि केन नदी में पानी की मात्रा ज्यादा है, इसलिए दोनों नदियों को जोड़कर केन के पानी को बेतवा में पहुंचाया जाएगा, जिससे लोगों को सिंचाई एवं पेयजल का लाभ मिल सकेगा। वैसे देखा जाए तो केन और बेतवा दोनों नदियां प्राकृतिक रूप से एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं, जो अंत में जाकर यमुना नदी में मिल जाती हैं, लेकिन सरकार जिस कृत्रिम तरीके से इन्हें जोड़ना चाह रही है, उसे पर्यावरण विशेषज्ञों ने पूरी तरह से विनाशकारी बताया है। सरकार का दावा है कि इसके जरिये 9.04 लाख हेक्टेयर की भूमि सिंचित होगी, जिसमें से मध्य प्रदेश में 6.53 लाख हेक्टेयर और उत्तर प्रदेश में 2.51 लाख हेक्टेयर भूमि की सिंचाई हो सकेगी। साथ ही 62 लाख लोगों को पेयजल भी मिलेगा। हालांकि बुंदेलखंड के विकास के नाम पर प्रचारित की जा रही इस परियोजना के तहत जहां एक तरफ क्षेत्र के 13 जिलों में से आठ जिले (पन्ना, टीकमगढ़, छतरपुर , सागर, दामोह, दतिया, बांदा, महोबा, झांसी और ललिपुर) को ही लाभ मिलने की संभावना है। केन-बेतवा नदी जोड़ों परियोजना को दो चरणों में लागू किया जाना है, जिसमें से पहले चरण में केन नदी के पास में स्थित दौधन गांव में एक बांध बनाया जाएगा, जो 77 मीटर ऊंचा और 2,031 मीटर लंबा होगा। इसके अलावा 221 किलोमीटर लंबी केन-बेतवा लिंक नहर बनाई जाएगी, जिसके जरिये केन का पानी बेतवा बेसिन में डाला जाएगा। दौधन बांध के चलते 9,000 हेक्टेयर का क्षेत्र डूबेगा, जिसमें से सबसे ज्यादा 5,803 हेक्टेयर पन्ना टाइगर रिजर्व का होगा, जो कि बाधों के रहवास का प्रमुख क्षेत्र माना जाता है। इस योजना के चलते 6,017 हेक्टेयर वन भूमि को पूरी तरह साफ कर दिया जाएगा, जिसमें बेहद संवेदनशील पन्ना टाइगर रिजर्व का 4,141 हेक्टेयर वन क्षेत्र भी शामिल है। - साभार डाउन टू अर्थ

पर्यावरण संरक्षण से अवगत हुए स्कूली बच्चे

मनेंद्रगढ़ यूनिवर्सल पब्लिक हायर सेकंडरी स्कूल मनेंद्रगढ़ में विद्यालय प्रबंधन ने बच्चों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने पहल की। विद्यालय प्रबंधन ने बच्चों को पर्यावरण से जोड़ने के लिए विद्यालय में उनसे विविध प्रजातियों के पौधे लगवाए। साथ ही जल संरक्षण के लिए उपाय बताए और भ्रमण के लिए बच्चों को बाहर ले जाकर मृदा संरक्षण के लिए मृदा को स्वच्छ रखना बताया। इस दौरान बच्चों को पर्यावरण की जानकारी दी गई और इसकी महत्ता से अवगत कराया। शिक्षकों ने बच्चों को बताया कि प्रकृति ने हमें कई प्रकार की सौगातें दी हैं। सबसे बड़ी सौगात पर्यावरण है। जीवन में वायु का बहुत महत्व है और वायु का स्रोत पेड़-पौधे होते हैं, इसलिए पौधों के संरक्षण और संवर्धन पर विशेष रूप से ध्यान देने की जरूरत है।

विश्व वन्यजीव दिवस 2023-10 लाख प्रजातियों पर मंडरा रहा है विलुप्ति का खतरा

नई दिल्ली। हर साल तीन मार्च को विश्व वन्यजीव दिवस मनाया जाता है। जंगली जानवरों की लुप्तप्राय प्रजातियों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए संयुक्त राष्ट्र ने इस दिन की घोषणा की थी। इस दिन वन्य जीवों और वनस्पतियों की लुप्तप्राय प्रजातियों में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के कन्वेंशन पर हस्ताक्षर किए गए।

विश्व वन्यजीव दिवस (डब्ल्यूडब्ल्यूडी) जंगली जीवों और वनस्पतियों के कई सुंदर और विविध रूपों का जश्न मनाने और उनके संरक्षण से लोगों को मिलने वाले लाभों के बारे में जागरूकता बढ़ाने का एक अवसर है। साथ ही, यह दिवस हमें वन्यजीव अपराध और प्रजातियों को इंसानों द्वारा पहुंचाएं जा रहे नुकसानों के खिलाफ लड़ाई को तेज करने की तत्काल आवश्यकता की याद दिलाता है, जिसके व्यापक आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभाव हैं। यही वजह है कि सतत विकास लक्ष्य -15 के तहत जैव विविधता के नुकसान को रोकने पर केंद्रित किया गया है। विकसित और विकासशील देशों में अरबों लोग हर दिन भोजन, ऊर्जा, सामग्री, दवा, मनोरंजन, प्रेरणा और मानव कल्याण के लिए कई अन्य महत्वपूर्ण चीजों के लिए जंगली प्रजातियों के उपयोग से लाभान्वित होते हैं। तेजी से बढ़ता वैश्विक जैव विविधता संकट, पौधों और जानवरों की एक लाख प्रजातियां विलुप्त होने की कगार पर पहुंच गए हैं। बोर्नियो के वनमानुष, सुमात्रा के हाथी और काले गैंडे में क्या समानता है? पूरी तरह से शांत जानवर होने के अलावा, जिन्हें हम अब बहुत कम देखते हैं। इन प्राणियों के बारे में सच्चाई यह है कि वे सभी गंभीर रूप से लुप्तप्राय प्रजातियां हैं। लेकिन विश्व वन्यजीव दिवस पर, संयुक्त राष्ट्र और उसके सहयोगी इस गंभीर स्थिति की गंभीरता के बारे में जागरूकता बढ़ाने की योजना बना रहे हैं। एक जानवर को केवल तभी गंभीर रूप से लुप्तप्राय प्रजातियों की सूची

में रखा जाता है, जब प्रकृति के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ को लगता है कि जानवर विलुप्त होने के लिए एक बहुत भारी खतरे का सामना करता है। गंभीर रूप से लुप्तप्राय क्या है? वर्तमान अनुमानों के अनुसार पूरी दुनिया में जीवित काले गैंडों की संख्या लगभग 2,500 है। देश के सुदूर पूर्वी इलाकों में पाया जाने वाला रूस का अमूर तेंदुआ विलुप्त होने के कगार पर है, जो दुनिया में केवल 40 ही बचे हैं। दुर्भाग्य से, यह सूची लगातार और आगे बढ़ रही है।

क्या है विश्व वन्यजीव दिवस 2023 की थीम?- विश्व वन्यजीव दिवस 2023 में वन्यजीव संरक्षण के लिए साझेदारी विषय के तहत मनाया जा रहा है, जो उन लोगों को सम्मानित करने के लिए हैं जो संरक्षण के क्षेत्र में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

क्या आप जानते हैं?- दुनिया भर में 50,000 जंगली प्रजातियां अरबों की जरूरतों को पूरा करती हैं। दुनिया भर में पांच में से एक व्यक्ति आय और भोजन के लिए जंगली प्रजातियों पर निर्भर है, जबकि 2.4 अरब लोग खाना पकाने के लिए लकड़ी के ईंधन पर निर्भर हैं। यह आश्चर्यजनक लगता है, लेकिन कैक्टि, समुद्री शैवाल, जिराफ, तोते और ओक के पेड़ लुप्तप्राय प्रजातियों के समूह हैं। वर्तमान में 10 लाख प्रजातियां खतरे में हैं।

पर्यावरण के अनुसार जीवनशैली जरूरी, मंत्री बोले-अस्थिर उत्पादन और खपत पर तुरंत ध्यान देने की जरूरत

नई दिल्ली केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने भारत-डेनमार्क के एक संयुक्त मंच पर कहा कि अस्थिर उत्पादन और खपत पर तुरंत ध्यान देने की जरूरत है। साथ ही उन्होंने कहा कि दोनों देश जलवायु लक्ष्यों को हासिल करने में एक उदाहरण स्थापित कर सकते हैं।

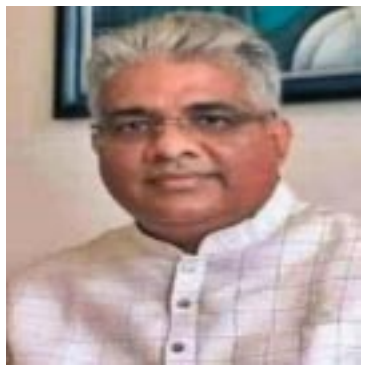

पर्यावरण मंत्री ने यह रेखांकित किया कि प्रत्येक व्यक्ति को यह सुनिश्चित करने की जरूरत है कि उसकी जीवनशैली हर स्तर पर धरती पर उपलब्ध संसाधनों के अनुरूप हो। 'भारत-डेनमार्क = हरित एवं टिकाऊ प्रगति के लिए साझेदारी सम्मेलन' में मंत्री ने इस बात का जिक्र किया कि भारत-डेनमार्क हरित रणनीतिक साझेदारी न सिर्फ दोनों देशों में, बल्कि यूरोप और पूरे विश्व में भी सतत जीवनशैली को बढ़ावा देने के लिए विचारों, सर्वश्रेष्ठ पहल, ज्ञान, प्रौद्योगिकी का आदान-प्रदान करने तथा क्षमता निर्माण के लिए एक उपयुक्त मंच है। इस दौरान डेनमार्क के क्राउन प्रिंस फ्रेडरिक आंद्रे हेनरिक क्रिश्चियन और उनकी पत्नी मौजूद रहीं। डेनमार्क के क्राउन प्रिंस फ्रेडरिक आंद्रे हेनरिक क्रिश्चियन ने हरित भविष्य की दिशा में भारत के प्रयासों की तारीफ करते हुए कहा, भारत में देखे गए परिवर्तन आश्चर्यजनक हैं। क्रिश्चियन ने कहा, आज दोनों देशों के बीच साझेदारी मजबूत है। हम दोनों एक हरित भविष्य की ओर बढ़ रहे हैं। इस सम्मेलन के साथ, भारत और डेनमार्क सभी के लिए एक हरित भविष्य प्राप्त करने के लिए एक नया कदम और करीब ले गए हैं। यह मेरी विनम्र कामना है कि एक साथ यह समृद्ध यात्रा जारी रहे।

समाचार पत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों के संबंधित वितरण घोषणा

फार्म - 4

1. प्रकाशक स्थल -209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर
2. प्रकाशन अवधि -साप्ताहिक
3. मुद्रक का नाम - डॉ. सोनल मेहता
   क्या भारत का नागरिक है - हाँ
   पता- -209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर
4. प्रकाशक का नाम -डॉ. सोनल मेहता
   क्या भारत का नागरिक है - हाँ
   पता- -209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर
5. संपादक का नाम -डॉ. सोनल मेहता
   क्या भारत का नागरिक है - हाँ
   पता- -209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक से साझेदार या हिस्सेदार हो। -डॉ. सोनल मेहता

मैं डॉ. सोनल मेहता एतद द्वारा घोषित करता हूँ मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य है।

हस्ताक्षर
1 मार्च 2023 डॉ. सोनल मेहता
(प्रकाशक के हस्ताक्षर

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008